ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. No.- 115-120

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

'अध्यात्म बारहखड़ी' में छंद विधान

स्नेहा जैन

शोध अध्येत्री– हिन्दी अध्ययन शाला एवं शोध केन्द्र, महाराजा छत्रसाल बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय छतरपुर (म0प्र0) भारत

Received-20.10.2022, Revised-26.10.2022, Accepted-31.10.2022 E-mail: greatsneha116@gmail.com

सारांश: ***'अध्यात्म बारहखड़ी' छंद विधान की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है। यह आँठ परिच्छेदों में विभक्त है। यह पं. दौलतराम कासलीवाल द्वारा, रीतिकाल में रचित, मुक्तक शैली का अध्यात्म प्रधान काव्य ग्रंथ है। इसमें वर्णमाला के वर्णक्रम अनुसार, प्रत्येक वर्ण से छंदों का विधान किया गया है। परिणाम एवं गुणवत्ता की दृष्टि से यह रचना अत्यंत समृद्ध है। इस काव्यात्मक रचना में अलंकारों का प्रयोग स्वतः स्फूर्त है। इसमें शांत रस की प्रधानता के साथ विविध छंदों का प्रयोग कवि द्वारा किया गया है।***

उक्त रचना में हिन्दी के साथ–साथ संस्कृत वाङ्मय में प्रयुक्त होने वाले छंदों का भी विधान किया गया है। लगभग 32 प्रकार के छंदो का प्रयोग रचना को रुचिकर एवं मनोरम बनाता है। एक छंद में, एक ही वर्ण पर बारह मात्राओं का प्रयोग दृष्टव्य है। सममात्रिक, अर्द्धसम मात्रिक, विषम मात्रिक एवं वार्णिक सभी प्रकार के छंदों के प्रयोग से रचना पाठक को रंजित करके बाँधे रहने में सक्षम है। पर्यायवाची शब्दों का बाहुल्य कहीं–कहीं रचना को शब्दकोश का रूप दे देता है।

कुंजीभूत शब्द– रीतिकाल, मुक्तक शैली, अध्यात्म प्रधान काव्य,काव्यात्मक रचना, रुचिकर, मनोरम, सममात्रिक, वार्णिक।

प्रस्तावना– अध्यात्म की प्रमुखता से, वर्णक्रम में रचित छंदों के कारण विवेच्य रचना का नाम 'अध्यात्म बारहखड़ी' सार्थकता को प्राप्त है। बारहखड़ी को वर्णमातृका, अक्षरमातृका, अक्षरबावनी, अक्षर बत्तीसी, अक्षर मालिका, अखरावट, ककहरा आदि नामों से भी जाना जाता है।

वर्ण, मात्रा, क्रम, गति, यति, गण, तुक, चरण आदि के नियमों से सम्पन्न रचना को छंद कहते हैं। छंद वार्णिक एवं मात्रिक दो प्रकारों के साथ प्राचीनतम काल से साहित्य में अपना स्थान बनाये हुए हैं। आधुनिक काल में छंद का एक और रूप भी प्रकट हुआ जो इन सभी नियमों से मुक्त होकर 'मुक्त छंद' के रूप में प्रसिद्ध है।

संस्कृत वाङ्मय के काल से ही रचनाओं में छंद विधान बड़ी ही सजगता, सम्पन्नता एवं विद्वत्ता के साथ प्रचलित था। उसी परिपाटी में हिन्दी साहित्य के काव्य जगत में भी छन्दों का महत्व रहा। हिन्दी ने कई छंद उनकी सभी विशेषताओं के साथ संस्कृत से तत्सम रूप में ग्रहण किए हैं एवं कई छंद स्वयं भी निर्मित किए हैं, जो हिन्दी की निजी सम्पत्ति है।

विवेच्य रचना 'अध्यात्म बारहखड़ी' में संस्कृत एवं हिन्दी दोनों ही प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है। इस संबंध में डॉ. वीरसागर जैन लिखते हैं– "छठें छंदोविधान की दृष्टि से भी यह रचना अत्यधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसमें केवल दोहा, सोरठा, चौपाई, चौपई, रोला, छप्पय, कवित्त, सवैया, गीता, पद्धड़ी, अडिल्ल, बरवै, त्रोटक, त्रिभंगी, मोतीदाम, कुंडलियाँ, नाराच, सारंगी वासुदेव, आदि अनेक हिन्दी छंदों का तो सुन्दर प्रयोग हुआ ही है; मालिनी, भुजंगप्रयात, अनुष्टुप, आर्या, मंदाक्रांता, शार्दूलविक्रीडित, स्त्रग्धरा, द्रुतविलम्बित, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, बसंततिलका, शिखरिणी आदि संस्कृत छंदों का भी मनोहर प्रयोग हुआ है। पूरी रचना में कुल करीब 32 प्रकार के छंदों का प्रयोग हुआ है।"[1]

छंद विधान की दृष्टि से रचना में प्रयुक्त छंदो का अध्ययन आवश्यक है। रचना में प्रयुक्त छंदों का प्रकार 1.वार्णिक छंद 2.मात्रिक छंद है।

1.वार्णिक छंद– वार्णिक छंद, वे छंद होते हैं जिनमें वर्णों की गणना के आधार पर निश्चित नियमों का पालन किया जाता है। कुछ छंदों के उदाहरण दृष्टव्य हैं जिनका प्रयोग 'अध्यात्म बारहखड़ी' में किया गया है।

उपेन्द्रवज्रा– इस छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 11 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में एक नगण, एक तगण, एक जगण और चरणांत में दो गुरु का क्रम होना आवश्यक है।

उदाहरण – **"तु ही सुहावै जु बुधैं निशंका। तु ही सुकावै जु विभाव पंका।
तु ही सुभावै सु सुभाव स्वामी। तु ही सु लावै शिवपंथ नामी।।"[2]**

द्रुतविलम्बित– इस छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण एवं एक सगण का क्रम होता है।

उदाहरण – **"यैर्न श्रुता त्वद्‌गदिता सुवाणी। नाराधिता त्वद्‌गत राजधानी।
हुता न पीड़ा च निपीड़ितानां। तेषां वृथा जन्म तनु भृतानां।।"[3]**

कवित्त– यह वार्णिक समवृत छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 16–15 की यति पर 31 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण के

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

अंत में गुरु वर्ण होता है।

उदाहरण – **"चोर पंच इन्द्री मन चोर दुष्ट वाक तनु,**
चौर काम, क्रोध, लोभ, मोह अतिभार जी।
चोर है मिथ्यात मोटौ चोर है प्रमाद खोटो,
चोर नहिं छोटो अवरत अतिझार जी।।
इनहि लै अनंत चोर लागे मेरौ कियो भोंर,
हरी मेरी ज्ञान निधि जो है अतिसार जी।
सुनि तोकौं न्याय रूप, कूकूं तेरै द्वार भूप,
निधि मेरी द्याय मोहि चोर गहिमार जी।।"[4]

बसन्ततिलका– यह सम वर्णवृत्त छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 14 वर्ण होते हैं। तगण, भगण, जगण, जगण और चरणांत में दो गुरु के क्रम से प्रत्येक चरण निर्मित होता है।

उदाहरण – **"तेरी सु स्वच्छ प्रभुता वचनादतीता।**
तोसौ सुजान जग मैं नहिं और लीता।।
मेरौ सुधार नहिं तोहि विना जु होई।
तेरौ स्वभाव सुरझार उधार सोई।।"[5]

भुजंगप्रयात– यह भी सम वर्णवृत्त छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 12 वर्ण होते हैं। प्रत्येक चरण में चार यगण की बारंबारता होती है अर्थात् यगण, यगण, यगण, यगण के क्रम से प्रत्येक चरण बनता है।

उदाहरण – **"सही तंत्र तेरा सबै जीव रक्षा।**
वही मंत्र तेरा न औरै जु पक्षा।।
नहीं कोय मंत्रा बिना नाम तैरे।
नहीं कोय हंता बिना मोह मैरे ।।"[6]

स्त्रग्धरा– इस छंद में चार चारण होते हैं। प्रत्येक चरण में 21 वर्ण होते हैं। मगण, रगण, भगण, नगण, यगण, यगण, यगण, के क्रम से प्रत्येक चरण रचित होता है। क्रमानुगत दो–दो चरण समतुकांत होते हैं। प्रति सात वर्ण पर यति होती है।

उदाहरण – **"मोकौं भक्ती जु देहो, अपर नहि चहुँ एक तोही जुसेऊं।**
तेरे पादांबुजा जे, मधुर मधुभरा ह्वै अली वास लेऊं।
अंबा ताता च भ्राता इक तुबहि लखूं एक तोही जु बेऊं।
सेऊं सेऊं जु तोही तुवमय जु भयो, धर्म नांवा जु खेऊं।।"[7]

मालिनी– यह वार्णिक समवृत छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 15 वर्ण होते हैं। 2 तगण, 1 मगण, 2 यगण के क्रम से 8–7 वर्ण पर यति होती है।

उदाहरण – **"जिन तजि जग मै जे राचिया मूढ़ जीवा।**
नहि लहहि शिवं ते जन्म धारै सदीवा।।
जिन भजि जग जीतैं ते लहैं स्वात्म तत्वा।
जिन सम लखि आपा, हौंहि ते शुद्ध सत्वा।।"[8]

भुजंगी– इसके प्रत्येक चरण में 3 सगण, 1 लघु, एक गुरु के क्रम से 11 वर्ण होते हैं।

उदाहरण – **"तुही है निषेधा बड़े घोल का जी।**
तुही है उछेदा दधी द्वैदलां जी।
तु ही घोष धर्मी, तुही घोष मर्मी।
तु ही घोष सत्यो अहिंसो विकरर्मी।।"[9]

मंदाक्रांता– यह वार्णिक समवृत छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 1 भगण, 1 नगण, 2 तगण, 2 गुरु के क्रम से 17 वर्ण होते हैं। 5,6,7 वें वर्ण पर विराम होता है।

उदाहरण – **"पांचाली जो कहहि जु जना, शुद्ध रूपा सती जो।**
पंचालो जो द्रुपद नृपति, पुत्रिका द्रोपदी जो।।
ताकौ स्वामी अरजन महा, चापधारी सही जो।

द्वै जेठा जे जनक जु समा, देवरा पुत्र ही दो।"[10]

शार्दूल विक्रीडित– यह चतुर्पदी वार्णिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 19 वर्ण होते हैं। 12–7 वर्ण पर यति होती है। हर चरण में मगण, सगण, जगण, सगण, तगण, तगण और अंत में एक गुरु का क्रम वर्णों में पाया जाता है।

उदाहरण – **"तेरै बंध जु ब्यारि भेद कबहूं नांही प्रभू पाइए।**
नांही आश्रव पंच भेद जिनके नां संवरो गाइये।।
नांही निर्जर दोय भेद तुव मैं मोक्षो कहां तै छुवै।
पुण्यापुण्य अचेतना न तुझमैं शुद्धो निजो तू हुवै।।"[11]

सवैया तेईसा– इसके प्रत्येक चरण में सात मगण और अंत में दो गुरु के क्रम से 23 वर्ण होते हैं।

उदाहरण– **"एक जु इन्द्रिय ले अमना लग, आदि जु थान विनां नहिं ठांनां।**
मानव चौदह लौं पहुंचै प्रभू तोहि जु ध्याय सु सिद्धि विधानां
पंचहि भेद मुनीसुर के प्रभु, आदि पुलाक अनादि निधानां।
पंचहि भेद सिकाव तने शुभ, तू हि जु भाषइ कारन ध्यानां।।"[12]

सवैया इकतीसा– इसके प्रत्येक चरण में 31वर्ण होते हैं। 16–15 पर यति होती है।

उदाहरण – **"मूढ़ता न तेरै माहि मूढ़ तोहि पावै नाहि,**
इंद्रिनि के विषयान तोकौ कहूं पावही।
विषयी लहै न तोहि निर्बिषै करै जु मोहि,
ज्ञायक तू तत्व कौ जु नायक बतांवही।
गावै तू जु ब्यारि वेद रूप द्वादशांग नाथ,
जर्जर न बोलैं तू जु मिष्ट बैन गावही।
सर्वाक्षर मूरति तू क्यौ अकार मैं न होय,
सुर नर नाग नाथ एक तोहि ध्यावहीं।।"[13]

अरिल्ल– इस छंद के प्रत्येक चरण में 16 मात्रायें एवं अंत में लघु या यगण होता है।

उदाहरण – **"च कहिए जगमांहि चन्द्रमा नाम है।**
ज्योतिष को है इंद्र सु सीतल धाम है।
तेरो है वह दास तू जु शशि पति प्रभु।
तू है तिमिर विनास शांतिकर ज्ञांन भू।"[14]

त्रोटक– इस छंद के प्रत्येक चरण में 12 मात्रायें, चार सगण के क्रम में होती हैं।

उदाहरण – **"इंद्रीपति सुत शत षंडकरं, धनु सायक पंच हरं सुनरं।**
चिद चाप जु व्रत सुरोप धरं, प्रणमामि पुनीत जु धर्म धुरं।"[15]

नाराच– इसे पंचचामर छंद भी कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 16 वर्ण होते हैं। इसमें 8 वर्ण पर यति के साथ दो पद समतुकांत होते हैं।

उदाहरण– **"तुही जिनेश संकरो सुखंकरो प्रजापती।**
तुही हिरण्यगर्भ को अगर्भ को धरापती।
महा स्व शक्ति पूरको तुही जिनो रमापंती।
रमा जु आंम नाम नांहि, शक्ति रूप है छती।"[16]

2.मात्रिक छंद– मात्राओं की गणना के आधार पर, निश्चित नियमबद्ध रचनाओं को मात्रिक छंद कहते हैं। यह तीन प्रकार के होते हैं।

– सममात्रिक छंद,
– अर्द्ध सममात्रिक छंद,
– विषम मात्रिक छंद।

उक्त आधार पर 'अध्यात्म बारहखड़ी' में प्रयुक्त छंदों के कुछ उदाहरण प्रासंगिक हैं।

सममात्रिक छंद– इस प्रकार के छंदो में चार चरण एवं प्रत्येक चरण में समान मात्रायें होती हैं।

चौपाई– इस छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 16–16 मात्रायें होती हैं।

उदाहरण – **"कोढ़ रूप इह काम विकारा। सौ मेरौ मेटौ भवतारा।**
संवर कोट देहु मम दुर्गा। मोहि न चहिये तौ तैं सुर्गा।"[17]

चौपई– इस छंद को जयकारी छंद भी कहते हैं। इसके प्रत्येक चरण में 15–15 मात्रायें होती हैं। अंत में गुरु लघु आवश्यक होता है।

उदाहरण – **"परम विष्णु जो परम जिनंद। प्रश्नातम, प्रशमातम कंद।**
प्रसन्नात्मा नित्य प्रसन्न। प्रशांतात्मा क्वापि न खिन्न।"[18]

गीता– इस छंद के प्रत्येक चरण में 26 मात्रायें होती हैं। 14–12 वर्णों पर यति के साथ आदि में समकल एवं अंत में लघु गुरु होता है।

उदाहरण – **"तू अपूरब पूरवो है, दिसि विदिसि मैं एक त्वं।**
ऊरधाधो एक तू ही, ज्ञान मूल विवके त्वं।"[19]

त्रिभंगी– यह छंद 32 मात्रा प्रतिचरण वाला छंद है। इसमें 10,8,8,6 पर यति के साथ चरणांत में गुरु होता है।

उदाहरण – **"फल फूल न पाता, फलित विख्याता, जगत प्रमाता, शिवत्राता।**
निरदुंद सदा ही, अतुल प्रभा ही, रहित व्यथा ही, अति पाता।
मन फदक मिटावै, जन समुझावै, तपति बुझावै, सुखकारी।
अति ही बड़भागा, परम विरागा, रहित विभागा, प्रभुभारी।"[20]

पद्धरि– यह सममात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। 10–6 या 8–8 पर यति होती है।

उदाहरण – **"आवरणी मेरी मेटि नाथ। देहो निज दरसण परम साथ।।**
आतम गुण भर करि मोहि देव। आदीश्वर दै निज परम सेव।"[21]

हाकलि छंद– यह एक सममात्रिक छंद है। इसके प्रत्येक चरण में 14–14 मात्रायें होती हैं। तीन चौकल के बाद एक गुरु होता है। यदि तीन चौकल अनिवार्य न हों तो यही छंद 'मानव छंद' बन जाता है।

उदाहरण – **"अति गुन भूषण अतिनिरदूषन। अति जगतारन रति पति दूषन।**
अति जगपारग, अति शिवमारग। अति सु उधारक, धर जिन मारग।"[22]

अर्द्धसममात्रिक– ऐसे छंद जिनके प्रथम, तृतीय विषम तथा द्वितीय, चतुर्थ सम चरणों की मात्रायें समान होती हैं, अर्द्ध सम मात्रिक छंद कहलाते है।

दोहा– यह अर्द्धसम मात्रिक छंद है। इसमें चार चरण होते हैं। इसके विषम चरणों, प्रथम तथा तृतीय चरण में 13–13 मात्राएँ और सम चरणों द्वितीय तथा चतुर्थ चरण में 11–11 मात्राएँ होती हैं।

उदाहरण – **"ऋद्धि जु चौसठि भेद ए, अंतर भेद अनेक।**
इनके धारक ऋषिवरा, तिनकै तत्व विवेक।।"[23]

सोरठा– दोहा का विपरीत सोरठा छंद होता है। इसके विषम चरणों में 11–11 तथा सम चरणों में 13–13 मात्रायें होती हैं।

उदाहरण – "अ कहिए श्रुति मांहि, हरि हर कौ इह नाम है।
तो बिनू अवर सु नांहि, हर हरि जिनवर देव तू।।"[24]

बरवै– इसके विषम चरणों में 12 मात्रायें एवं सम चरणों में 7 मात्रायें होती हैं। सम चरणांत में जगण होता है।

उदाहरण – **"रतनत्रय कौ दायक तव जिन एक।**
मणि पाषांण जु दायक हौंहि अनेक।।
सबकी इच्छा पूरहिं तू बिनु इच्छा।
निरग्रंथो निरमोहो तू जु निरिच्छ।।"[25]

उल्लाला– इस छंद को चन्द्रमणि भी कहा जाता है। यह दो प्रकार होता है। प्रथम–प्रत्येक चरण में 13–13 पर यति के साथ 26 मात्रायें एवं 11 वीं मात्रा लघु होती है। द्वितीय–प्रत्येक चरण में 15–13 पर यति के साथ 28 मात्रायें एवं 13 वीं मात्रा पर लघु होता है।

उदाहरण – **"पुरुष जु लक्षण पंच है, दान भोग गुणरागता।**
विद्यापारग सुभटता, सबतैं सरस विरागता।।"[26]

विषम मात्रिक छंद जहाँ चरणों की मात्राओं में समानता न हो उसे विषम मात्रिक छंद कहते हैं।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- IV, Issues-26, YEAR- Oct.-Dec.-2022

छप्पय– छप्पय मात्रिक विषम छंद है। यह संयुक्त छंद है। जो रोला तथा उल्लाला के योग से बनता है। इसमें छह चरण होते हैं। प्रथम चार चरण रोला और अंतिम दो चरण उल्लाला के होते हैं। रोला के प्रत्येक चरण में 11–13 की यति पर 24 मात्राएं एवं उल्लाला के हर चरण में 15–13 की यति पर 28 मात्रायें होती हैं।

उदाहरण – **"वोरा धोर वरा जु सर्व बैंगण तु अभक्षा।**
गूलर अंजीरादि फल न पीपर के भक्षा।।
बड़ के फल अति निंद्य, निंद्य पाकर फल गावैं।
अणं जाण्यों फल निंद्य, निंद्य विष जाति बतावै।।
सारौ फल नहिं खायबौ, यां है कीटादिक जु ह्वै।
कंदमूल अर मट्टिका, नान्हौं फल भखि पाप ह्वै।।"[27]

कुण्डलिया– यह छंद दोहा और रोला छंद से मिलकर बनता है। इसमें छः चरण होते हैं। पहला चरण दोहा छंद और शेष चरण रोला की विशेषताएँ लिए होता है। दोहे का चौथा चरण, रोला के प्रथम चरण का पूर्वार्द्ध होता है। दोहे के प्रारंभ के एक दो शब्द रोला के अंत में आते हैं।

उदाहरण – **"हिंसादिक अपराध जे, तेरै मत नहिं लेस।**
दया रूप धर्म सुविधी, तू भाषै जगतेस।।
तू भाषै जगदेस दया कौ पालक तू ही।
यज्ञपवीत सु लैन रीति भाषै सु समूही।।
द्विज नृप वैस्यनि कौं जु धारिवौं विसवा विंसा।
तजिवौ मन वच काय, पाप को मूल जुहिंसा।।"[28]

निष्कर्ष– 'अध्यात्म बारहखड़ी' में विविध प्रकार के छंदों का प्रयोग किया गया है।जिसमें छंदो के वार्णिक एवं मात्रिक सभी प्रकारों द्वारा रचना को रोचकता प्रदान की गई है। छंदो का कथ्य केवल अध्यात्मिक है। जैन दर्शन की अवधारणाओं के भेद–प्रभेद, गणना, कथायें आदि रचना में दृष्टव्य हैं। इन विवरणों के कारण भी छंदों में कहीं दुरूहता नहीं आने पायी है। छंद सहज एवं सरस रूप से प्रवाहित हैं। कवि को जितना हिन्दी से प्रेम है उतना ही संस्कृत से लगाव। उन्होनें दोनों ही भाषाओं के शब्दों एवं छंदों का प्रयोग कुशलता से किया है। निष्कर्षतः 'अध्यात्म बारहखड़ी' छंद विधान की दृष्टि से एक महत्वपूर्ण रचना है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कासलीवाल, दौलतराम, अध्यात्म बारहखड़ी, श्री साहित्य प्रकाशन दिल्ली,2022, प्रस्तावना, पेज नं.(ग)।
2. कासलीवाल, दौलतराम, अध्यात्म बारहखड़ी, श्री साहित्य प्रकाशन दिल्ली,2022, पृ. क्र.–625, छंद क्र. 330.
3. वही, पृ. क्र.–518, छंद क्र. 76.
4. वही, पृ. क्र.–258, छंद क्र. 175.
5. वही, पृ. क्र.–624, छंद क्र. 322.
6. वही, पृ. क्र.–356, छंद क्र. 175.
7. वही, पृ. क्र.–189, छंद क्र. 167.
8. वही, पृ. क्र.–183, छंद क्र. 006.
9. वही, पृ. क्र.–233, छंद क्र. 54.
10. वही, पृ. क्र.–432, छंद क्र. 241.
11. वही, पृ. क्र.–465, छंद क्र. 121.
12. वही, पृ. क्र.–439, छंद क्र. 309.
13. वही, पृ. क्र.–295, छंद क्र. 16.
14. वही, पृ. क्र.–260, छंद क्र. 194.
15. वही, पृ. क्र.–113, छंद क्र. 72.
16. वही, पृ. क्र.–31, छंद क्र. 50.
17. वही, पृ. क्र.–205, छंद क्र. 165.

18. वही, पृ. क्र.–412, छंद क्र. 33.
19. वही, पृ. क्र.–130, छंद क्र. 142.
20. वही, पृ. क्र.–443, छंद क्र. 23.
21. वही, पृ. क्र.–97, छंद क्र. 18.
22. वही, पृ. क्र.–77, छंद क्र. 333.
23. वही, पृ. क्र.–146, छंद क्र. 83.
24. वही, पृ. क्र.–49, छंद क्र. 01.
25. वही, पृ. क्र.–191, छंद क्र. 07.
26. वही, पृ. क्र.–436, छंद क्र. 290.
27. वही, पृ. क्र.–460, छंद क्र. 74.
28. वही, पृ. क्र.–513, छंद क्र. 13.

*****